कविता की समझ

देवयानी भारद्वाज

प्रस्तुत लेख भाषा शिक्षण में कविता की ज़गह, उसे समझने के नज़रिए, कविता को उपयोग में लाए जाने के तौर तरीकों के सन्दर्भ में स्कूली शिक्षक को मदद मिल सके इस दिशा में एक प्रयास है। लेख, कविता क्या है, आरम्भिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण के क्या उद्देश्य हैं व इनमें कविता शिक्षण की क्या जगह है और भाषा शिक्षण में विभिन्न स्तरों पर कविता का इस्तेमाल किस तरह हो सकता है इन सभी के सन्दर्भ में विस्तार से चर्चा करता है। लेख बताता है कि प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में कविता शिक्षण होता है, लेकिन बच्चे यह एहसास नहीं कर पाते कि कविता है क्या? क्योंकि शिक्षकों का यही मानना होता है कि भाषा तो बच्चे तभी सीखेंगे जब उन्हें मात्राओं और अक्षरों का ज्ञान होगा और माध्यमिक कक्षाओं में ज़ोर होता है कविता की व्याख्या पर। देवयानी ने अपनी बात को ठोस रूप से रखने के लिए कविताओं की ही मदद ली है जिससे लेख में कही गई बातों के निहितार्थ समझने में मदद मिलती है। सं.

साहित्य की विधाओं की पड़ताल और उनमें कविता की जगह, उसके स्वरूप और विषयवस्तु आदि को लेकर भारतीय और पाश्चात्य साहित्य जगत में पर्याप्त विमर्श मौजूद हैं। अपने सन्दर्भ में यह सभी विमर्श अत्यन्त प्रासंगिक भी हैं। इस विषय पर इतना कुछ लिखा जा चुका है कि कुछ भी कहना अब तक कहे गए को दोहराना मात्र होगा। हालाँकि स्कूली शिक्षा के आरम्भिक वर्षों में भाषा शिक्षण के एक उपकरण के रूप में और कालान्तर में एक साहित्यक विधा के रूप में कविता के शैक्षिक उद्देश्यों और लक्ष्यों पर अभी भी और बहुत बातचीत की ज़रूरत है। कविता की इस जगह, उसे समझने के नज़रिए, उसे उपयोग में लाये जाने के तौर तरीकों के सन्दर्भ में स्कूली शिक्षक को मदद मिल सके, ऐसा साहित्य बहुत ज़्यादा उपलब्ध नहीं है।

हम अपने अनुभव से यह जानते हैं कि बचपन में सुनाई जाने वाली लोरी, छोटी-छोटी कविताओं और बालगीतों के रूप में कविता का हमारे जीवन में प्रवेश औपचारिक स्कूली शिक्षा के शुरू होने से बहुत पहले हो चुका होता है। स्कूल में औपचारिक भाषा शिक्षण शुरू करने के भी पहले से कविता अपना काम करना शुरू कर देती है। आरम्भिक कक्षाओं में कविता या बालगीत का उपयोग कुछ हद तक कविता के आनन्द के लिए होता है लेकिन बहुत जल्दी ही स्कूली व्यवस्था कविता के आस्वाद को विकसित करने की बजाए उसका अर्थ बताने और सीमित सन्दर्भ में व्याख्या करने पर अत्यधिक जोर देने लगती है। आरम्भिक कक्षाओं में कविता के उपयोग की एक बानगी कवि प्रभात अपने एक लेख में देते हैं—

'शिक्षक नीरस ढंग से कविता को पढ़ डालते हैं और उसका अर्थ समझाने लगते हैं। वे किताब खोलकर और बच्चों से किताब खुलवाकर पढ़ते हैं, "बैठ डाल पर चिड़िया रानी, चूं-चूं, चीं-चीं गाती हैं।" अब इसका अर्थ करते हैं गोया इस पंक्ति का इसके अलावा भी कोई

अर्थ हो।[1] औपचारिक शिक्षा व्यवस्था में कविता को सामान्यतः जिस तरह बरता जाता है उस सिलसिले में अमरीकी कवि बिली कॉलिंस की यह कविता बहुत मुफीद जान पड़ती है–

मैंने उनसे कहा एक कविता को उठा कर रोशनी की ओर इस तरह देखो
जैसे किसी रंगीन स्लाइड को देखते हो
या इसके गुंजार को कान लगा कर सुनो
मैंने कहा एक चूहे को कविता के बीच छोड़ दो
और उसे बाहर का रास्ता तलाशते हुए देखो
या कविता के कमरे में जाओ और
लाईट का बटन दबाने के लिए उसकी दीवारों को टटोलो
मैं चाहता था कि वे कविता की सतह पर
स्कीइंग करते हुए गुजरें और
तट पर खड़े लेखक का हाथ हिला कर अभिवादन करें
लेकिन वे तो बस यह चाहते हैं कि
कविता को कुर्सी पर बिठाएँ और रस्से से बाँधकर
उसे तब तक प्रताड़ित करें
जब तक वह अपना गुनाह कुबूल न ले
वे एक पाइप से उसे पीटते चले जाते हैं
ताकि वह बता दे कि आखिर वह कहना क्या चाहती है [2]

स्कूली जीवन की आरम्भिक कक्षाओं में कविता, उस पर प्रश्नोत्तर और कविता की सन्दर्भ सहित व्याख्या पर ज़ोर इस कदर बढ़ता चला जाता है कि कविता को पढ़ने का अनुभव, उससे खुलने वाली छवियाँ, उसे पढ़ने के दौरान त्वचा पर हो सकने वाला स्फुरण उस कक्षा के पूरे अनुभव से गायब रहता है। इन कक्षाओं में कविता को पढ़ना और इतिहास या रसायनशास्त्र के किसी पाठ को पढ़ना भिन्न ऊर्जा या वातावरण का संचार नहीं करता। जब तक कविता की कक्षा का अनुभव अपने परिवेश को देखने की अलग नज़र विकसित नहीं करता जीवन में कविता की उपयोगिता पर प्रश्न उठते रहेंगे और साहित्य को उच्चतर अध्ययन के लिए चुनना छात्रों के लिए अपनी पसन्द की बजाए अन्तिम शरण्य बनता रहेगा।

दरअसल कविता पढ़ना, सुनना और समझना एक खास तरह की संवेदनशीलता की माँग करता है। कविता अपनी विषयवस्तु और विन्यास में एकांगी नहीं होती और उसके आस्वाद के लिए उसके साथ समय बिताने, उसे महसूस करने, उसे जीने की ज़रूरत होती है। जब तक पाठक और कविता के बीच यह तादात्म्य नहीं बनता कविता का शाब्दिक अर्थ तो पा लिया जा सकता है लेकिन कविता के मर्म से पाठक अछूता रह जाता है। इस सिलसिले में कुंवर नारायण की 'बाकि कविता' को ही लें, वे लिखते हैं–

पत्तों पर पानी गिरने का अर्थ पानी पर पत्ते गिरने के अर्थ से भिन्न है।
जीवन को पूरी तरह पाने
और पूरी तरह दे जाने के बीच
एक पूरा मृत्यु चिह्न है
बाकि कविता
शब्दों से नहीं लिखी जाती
पूरे अस्तित्व को खींच कर एक विराम की तरह कहीं भी छोड़ दी जाती है [3]

इस कविता में प्रयुक्त प्रत्येक रूपक अपने आप में अनेक अर्थों को उद्घाटित करता है। जैसे 'पानी पर पत्ते गिरने' की बात हो या 'पत्तों पर पानी' दोनों ही रूपक परस्पर दो अलग बात तो कहते ही हैं, दोनों में से कोई एक भी सिर्फ एक तरह उद्घाटित नहीं होता। बल्कि प्रत्येक रूपक कवि के द्वारा कल्पित एक अर्थ से परे प्रत्येक पाठक के लिए एक नए रूपक की तरह भी उद्घाटित होता है। प्रत्येक पाठक का पानी और पत्तों के साथ सम्बन्ध इस रूपक को उस पाठक के लिए खोलता है। इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम इस बात को समझें कि 'कविता शब्दों से नहीं लिखी जाती, पूरे अस्तित्व

को खींचकर एक विराम की तरह कहीं भी छोड़ दी जाती है...' यहाँ शब्दों से नहीं लिखे जाने की बात कह कर आखिर कवि कविता के किस तत्व की ओर ध्यान दिलाना चाहता है? क्या भाषा में कुछ भी कहा जाना शब्दों के बिना संभव है? यदि शब्दों से कविता नहीं लिखी जाती तो शब्द और अर्थ के साथ कविता का यह सम्बन्ध किस तरह का है? जबकि वही कवि एक अन्य कविता में कहता है 'कोई चाहे भी तो रोक नहीं सकता– 'भाषा में उसका बयान'। हम पूछ सकते हैं कि यदि कविता 'शब्दों में नहीं लिखी जाती' तो 'भाषा में उसका बयान' से कवि का आशय क्या है? इस कविता को भी पूरा पढ़ लें–

कविता वक्तव्य नहीं गवाह है
कभी हमारे सामने
कभी हमसे पहले
कभी हमारे बाद
कोई चाहे भी तो रोक नहीं सकता
भाषा में उसका बयान
जिसका पूरा मतलब है सचाई
जिसकी पूरी कोशिश है बेहतर इन्सान
उसे कोई हड़बड़ी नहीं
कि वह इश्तहारों की तरह चिपके
जुलूसों की तरह निकले
नारों की तरह लगे
और चुनावों की तरह जीते
वह आदमी की भाषा में
कहीं किसी तरह जिन्दा रहे, बस [4]

यह आदमी की भाषा में किसी तरह जिन्दा रहने की कामना है। आखिर कविता ऐसा क्या करती है कि कवि कविता के लिए इस तरह दुआ माँगने की ज़रूरत महसूस करता है। इस भौतिक जीवन को जीने के लिए अपनी सीधी ज़रूरत कविता महसूस नहीं कराती और इस बात का अहसास अधिकांश कवि रखते हैं, फिर भी कोई तो वज़ह है कि वे कविता रचते हैं। कवि राजेश जोशी अपनी डायरी 'एक कवि की नोटबुक' में 'कविता और कुर्सी' शीर्षक के अंतर्गत कहते हैं, ''कविता कोई फिनिश्ड प्रोडक्ट नहीं है। वह एक प्रक्रिया है। इसलिए कवि और पाठक के बीच का सम्बन्ध भी एक सतत सम्बन्ध है। कुर्सी बनाने के बाद उसे खरीद लेने वाले और उसे बनाने वाले के बीच जिस तरह सम्बन्ध समाप्त हो जाता है, कवि और पाठक के बीच ऐसा नहीं होता।[5]''

कविता को समझने की इस कोशिश में हमने अधिकांशतः यह पाया कि कविता की इस ज़रूरत को साहित्य या कला मात्र की ज़रूरत से अलग करके देख पाना असंभव की हद तक कठिन है। अपनी पुस्तक 'कला की ज़रूरत' की शुरुआत अंर्स्ट फिशरज्यां कॉक्तो की इस आकर्षक विरोधाभासी सूक्ति से करते हैं– ''कविता के बिना काम नहीं चल सकता, लेकिन मैं यह नहीं बता सकता कि उसका काम क्या है।[6]'' जिस किसी ने भी कला की इस जरूरत को पहचानने की कोशिश की वह अपने पूर्ववर्ती रचनाकारों और कलाकारों के पास गया। फिशर, चित्रकार मोंद्रिया को उद्धृत करते हैं, जो यह कहते हैं कि यथार्थ उत्तरोत्तर कलाकृति की जगह लेता जाएगा, क्योंकि कलाकृति सारतः उस सन्तुलन की स्थानापन्न है, जो आजकल यथार्थ में नहीं पाया जाता।[7] फिशर इस पर प्रश्न खड़े करते हैं–''क्या कला वास्तव में एक स्थानापन्न से अधिक कुछ नहीं? क्या वह मनुष्य और बाह्य जगत के बीच एक गहनतर सम्बन्ध को भी अभिव्यक्ति नहीं देती? क्या सचमुच कला जो काम करती है, उसका सार किसी फार्मूले में प्रस्तुत किया जा सकता है? क्या उसे बहुत-सी और विभिन्न प्रकार की ज़रूरतें पूरी नहीं करनी पड़तीं? और यदि कला के उद्‌गमों पर विचार करते हुए हम उसके मूल काम को जान भी लें, तो क्या वह काम भी समाज के बदलने के साथ-साथ बदल नहीं गया है? क्या उसके नए काम अस्तित्व में नहीं आ गए हैं?'' उनका अपना विश्वास यह है कि ''कला की ज़रूरत हमेशा रही है, आज भी है और आगे

भी रहेगी।[8]'' दुविधा यह है कि इस ज़रूरत को कितनी भी शिद्दत से महसूस किया जाए, यह पकड़ में नहीं आती। इसे तरह-तरह की ज़रूरत के रूप में समझना होता है और फिर भी एक ही कलाकृति सब पाठकों या दर्शकों को एक-सा आस्वाद या संतुष्टि नहीं देती। यहाँ तक कि प्रत्येक रचनाकार एक जैसी ज़रूरत से प्रेरित हो कर किसी रचना में संलग्न नहीं होता। फिशर इसे पकड़ने की कोशिश में आगे कहते हैं ''सामाजिक विकास की विशिष्ट अवस्था के अनुसार किसी खास समय में कला के दो तत्वों में से कोई एक तत्व प्रमुखता प्राप्त कर लेता है— कभी जादुई सांकेतिकता, तो कभी तार्किकता और प्रबोधकता। कभी स्वप्न जैसी सहज अनुभूति तो कभी बोध को तीव्र बनाने की इच्छा। लेकिन कला सुलाए चाहे जगाए, चीजों पर पर्दा डाले चाहे रोशनी डाले, वह यथार्थ का ऐसा वर्णन कदापि नहीं होती जैसे रोग का निदान मात्र हो। उसका काम तो हमेशा सम्पूर्ण मनुष्य को प्रभावित करना होता है, 'मैं' का अन्य लोगों के जीवन से तादात्म्य स्थापित करने में समर्थ बनाना होता है।[9]''

भाषा शिक्षण के उद्देश्य और कविता शिक्षण

भाषा की कक्षा में विभिन्न स्तरों पर कविता के इस्तेमाल पर चर्चा से पहले संक्षेप में इस बात को समझना बहुत ज़रूरी है कि भाषा शिक्षण के उद्देश्य को हम कैसे समझते हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 से सम्बन्धित 'भारतीय भाषाओं का शिक्षण' आधार पत्र में भाषा शिक्षण के उद्देश्य तय करने के आधारों पर कहा गया है, ''चूँकि बच्चे अच्छी ख़ासी विकसित भाषिक व्यवस्था के साथ ही स्कूल आते हैं, इसलिए इसे ध्यान में रखते हुए ही स्कूली पाठ्यचर्या में भाषा शिक्षण के उद्देश्य तय किए जाने चाहिए। सबसे महत्त्वपूर्ण लक्ष्य बच्चे को इस प्रकार से साक्षर बनाना है कि बच्चा समझने के साथ पढ़ने व लिखने की क्षमता हासिल कर सके।[10]''

भाषा की कक्षा के यथार्थ के बारे में आधार पत्र साफ शब्दों में कहता है कि ''भाषा की कक्षाएँ अभी भी बोरियत भरी व उबाऊ बनी हुई हैं और व्यवहारवादी ढाँचे का ही अनुसरण कर रही हैं। वे भाषाएँ जिनसे बच्चा परिचित होता है यानी जिनके साथ स्कूल में प्रवेश करता है उनमें विशेष प्रगति नहीं कर पाता...।[11]'' ज़ाहिर है कि आधार पत्र यह अपेक्षा करता है कि भाषा की कक्षा में बच्चों को लक्ष्य भाषा सिखाने के साथ ही साथ उन भाषाओं में भी उनके कौशलों का विकास हो जो वे घर से सीख कर आते हैं। भाषाई कौशलों का विकास महज सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने के सीमित दायरे में नहीं देखा जा सकता। बल्कि आधार पत्र का यह मानना है कि इस नज़रिए ने भाषा शिक्षण का नुकसान ही किया है। आधार पत्र भाषा दक्षता के मामले में ज़्यादा समग्रतावादी दृष्टिकोण अपनाने की वकालत करता है।

स्वाभाविक तौर पर यह पूछा जा सकता है कि जब बच्चे विकसित भाषाई क्षमता के साथ स्कूल आते हैं, तो स्कूल में उन्हें भाषा सिखाने का औचित्य और आवश्यकता क्या रह जाती है? शिक्षकों के साथ भाषा पर कार्यशालाओं में अधिकांश शिक्षक यह मानते हैं कि बच्चे बोलना और सुनना घर से सीख कर आते हैं, स्कूल में वे महज पढ़ना और लिखना सीखते हैं। वे यह भी मानते हैं कि पढ़ना और लिखना सीखने के लिए जरूरी है कि बच्चों को वर्ण ज्ञान करवाया जाए। वर्ण से शब्द और शब्द से वाक्य तथा व्याकरण के नियम जानने की प्रक्रिया में बच्चे भाषा सीख जाते हैं। जबकि भाषा की प्रकृति और सीखने के सिद्धान्त दोनों इस बात को प्रमाणित करते हैं कि भाषा सीखने की प्रक्रिया मूलतः अपने आसपास की दुनिया को अर्थ देने की प्रक्रिया है। सीखने के सिद्धान्त इस बात को भी प्रमाणित करते हैं कि आरम्भिक कक्षाओं में बच्चों में अमूर्तन की क्षमता का विकास नहीं हुआ होता है और वे मूर्त उदाहरणों की सहायता से अमूर्त अवधारणाओं को समझते हैं। इस सन्दर्भ में भाषा सीखने की प्रक्रिया को देखें तो यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि वर्ण किसी भी भाषा की

न्यूनतम इकाई तो हैं लेकिन वह सार्थक या मूर्त इकाई नहीं है। भाषा की न्यूनतम मूर्त इकाई शब्द हैं और शब्दों के भी अर्थ, सन्दर्भ के साथ भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। इस लिहाज़ से भाषा सीखने के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि बच्चों को भाषा के विविध प्रकार के उपयोग करने के अवसर दिए जाएँ। यह सभी अवसर अर्थपूर्ण उपयोग के अवसर हों। कविता-कहानी आरम्भिक कक्षाओं में बच्चों को भाषा के इस्तेमाल के सार्थक अवसर उपलब्ध कराती हैं। कहानी जहाँ बच्चों को किसी घटनाक्रम को व्यवस्थित ढंग से सुनने, समझने और कहने के अवसर प्रदान करती है वहीं कविता उन्हें भाषा के कल्पनाशील और रचनात्मक उपयोग के अधिकतम अवसर उपलब्ध कराती है। आरम्भिक कक्षाओं में जब बच्चों को भाषा सीखने का समग्र, सन्दर्भपूर्ण परिवेश मिलता है तो वे आगे की कक्षाओं में भाषा और साहित्य ही नहीं विभिन्न विषयों के भी बेहतर पाठक बन पाते हैं। यह बेहतर पाठक किसी भी पठन सामग्री से गुजरते हुए उसमें निहित विचार को अपने अनुभव के सन्दर्भ में जाँच और परख पाता है, उस पर सवाल उठा पाता है, उससे सन्दर्भ ग्रहण करते हुए अन्य सन्दर्भों से जानकारी एकत्रित करने और उसके साथ अन्तःक्रिया करने की दिशा में प्रेरित होता है। भाषा की आगे की कक्षाओं में भी यह छात्र विभिन्न विधाओं, विभिन्न रचनाकारों और उनके विभिन्न सन्दर्भों के साथ अधिक सघन क्रिया के लिए तैयार होता है।

भाषा की कक्षा में कविता

स्कूली शिक्षा में सामान्यतः कविता का दो तरह का इस्तेमाल देखा जा सकता है–

पहला, आरम्भिक कक्षाओं में माहौल निर्माण, रोचकता आदि के लिए गीत और कविता का उपयोग। यह वह समय है, जब शिक्षक स्वयं भी हाव-भाव के साथ बच्चों को लय में कविता सुनाते हैं और बच्चों से उसका दोहरान करवाते हैं। गीत-कविता, कहानी और बातचीत का इस्तेमाल इसी तरह के उद्देश्यों के साथ करने के दौरान शिक्षक के मन में इस बात को लेकर कोई संशय नहीं होता कि पढ़ना और लिखना सिखाने के लिए तो वर्ण पहचान और शब्द तथा वाक्य निर्माण की परम्परागत विधियाँ ही कारगर होती हैं। वे यह मानते हैं कि जब तक बच्चा वर्णों को पहचानना शुरू नहीं करता तब तक उससे गीत-कविता पढ़ने और समझने की अपेक्षा बेमानी है। यही वह समय भी है जब भाषा की कक्षा में कविता, सीखने के दबाव से मुक्त रहती है, लेकिन इस दौरान वह सीखने के दबाव से इस कदर मुक्त होती है कि स्वयं बच्चों को भी बहुत जल्दी यह अहसास होने लगता है कि वास्तविक पढ़ाई-लिखाई तो वही है जो अध्यापक बोर्ड की सहायता से उन्हें कराते हैं। इसलिए बाद के सालों में कक्षा के कुछ होनहार बच्चे प्रातःकालीन सभा, स्कूल के वार्षिकोत्सव, बाल सभा आदि में सुनाए जाने वाले हुनर के रूप में कविता का इस्तेमाल करते हैं लेकिन अधिकांश बच्चों के लिए कविता भी भाषा की कक्षा के एक अन्य उबाऊ अनुभव से अधिक कुछ नहीं बन पाती।

दूसरा उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं में कविता की सन्दर्भ सहित व्याख्या के रूप में। सामान्यतः इस स्तर पर भी बच्चों को कविता के साथ स्वयं अर्थपूर्ण अंतःक्रिया करने के अवसर उपलब्ध कराने की बजाए शिक्षक एक निश्चित अर्थ बता देते हैं, जिन्हें छात्र को विभिन्न परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने के लिए याद कर दोहरा भर देना होता है। इस प्रक्रिया में किसी भी स्तर पर छात्र को स्वयं कविता के साथ संज्ञानात्मक स्तर पर सम्बन्ध बनाने के अवसर लगभग नदारद रहते हैं।

आइए इस बात को समझने की कोशिश करें कि कविता क्या करती है और उसका भाषा की कक्षा में कैसे बेहतर उपयोग किया जा सकता है। कक्षा में कविता के इस्तेमाल को हम तीन

भागों में बाँट कर समझ सकते हैं–

1. आरम्भिक कक्षाओं में भाषा सीखने के उपकरण के रूप में

किसी भी स्तर पर कविता का अपने पाठक या श्रोता पर प्रभाव एकांगी नहीं होता है। यह बात ठीक है कि आरम्भिक कक्षाओं में कविता बच्चों के भाषाई कौशलों के विकास में सहायक उपकरण में रूप में काम करती हैं लेकिन भाषा की कक्षा में कविता का सजग इस्तेमाल बच्चों में बहुत कम उम्र से कविता की विशिष्ट विधागत समझ का भी विकास कर रहा होता है। इतना ही नहीं कविता का विविधतापूर्ण, सजग और रचनात्मक इस्तेमाल यदि कक्षा में किया जाता है तो बच्चे इस स्तर से ही किसी विषयवस्तु के विविध निहितार्थों के साथ अंतःक्रिया करना शुरू कर सकते हैं, भाषा के विविध इस्तेमाल से उनका परिचय होने लगता है और भाषा के साथ खेलने की उनकी सहज प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। वे विभिन्न सन्दर्भों में चीजों को समझना शुरू कर सकते हैं। यह तभी सम्भव है जब शिक्षक स्वयं कविता के पाठ में रुचि लें और उसे अर्थ समझने की उबाऊ प्रकिया तक सीमित करके न छोड़ दें।

बच्चे स्वाभाविक रूप से भाषा के साथ खेलना पसन्द करते हैं। उन्हें नए-नए शब्द गढ़ना या तुकबंदियाँ बनाना पसन्द होता है। भाषा की कक्षा में वर्णमाला सीखने पर अत्यधिक ज़ोर , सही उच्चारण और शुद्धता का आग्रह, कविता से कठिन शब्दों के अर्थ चुनना, कविता का अर्थ बताना और रिक्त स्थानों की पूर्ति तथा सूचना परक प्रश्नोत्तर जैसी प्रकियाएँ बच्चों की भाषा के साथ खेलने की स्वाभाविक प्रवृत्ति को बाधित कर देती हैं। वहीं यदि शिक्षक स्वयं बच्चों के साथ मिलकर तरह-तरह की कविताओं का पाठ करें, कविता को सुनने के अनुभव, कविता की विषय वस्तु से सम्बन्धित चर्चा, उसमें भाषा के उपयोग आदि पर बातचीत करें और बच्चों को नई कविताएँ रचने का मौका दें तो बच्चों की रचनात्मक क्षमता और भाषा को तरह-तरह से बरतने की क्षमता का विस्तार किया जा सकता है।

भाषा की कक्षा को नैतिक शिक्षा के बोझ से भी मुक्त रखे जाने की ज़रूरत है। अच्छी आदतें, देशभक्ति या नैतिक उपदेश देना कविता का काम नहीं। नीति की सूक्तियाँ या दोहे, देशभक्ति की कविता आदि कविता विधा का एक रूप हो सकती हैं। कक्षा में उनके पाठ को वर्जित किए जाने की बात भी यहाँ हम नहीं कर रहे हैं। लेकिन कविता क्रिया-प्रतिक्रिया के अन्दाज़ में शिक्षित करने का काम नहीं करती कि इधर बच्चे को देशभक्ति की कविता पढ़ाई और उधर बच्चा देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत होने लगे। कविता व्यापक अर्थ में बच्चे में उन सारे मूल्यों का विकास करती है, जो साहित्य की किसी भी विधा से अपेक्षा की जाती है। लेकिन वह ऐसा तभी करती है जब स्वयं उसे कक्षा में संवेदनशीलता के साथ बरता जाए। कविता को पढ़ते हुए बच्चों के साथ उसके भाषागत गुणों और उसके संवेदनात्मक फलक की चर्चा की जाए। कभी-कभी महज़ कविता का आनन्द लेने के लिए कविता का पाठ किया जाना भी इसी उम्र से बहुत महत्वपूर्ण है। बस इस बात का खयाल रखे जाने की ज़रूरत है कि यह भी कक्षा की एक नियोजित और अनिवार्य गतिविधि के रूप में हो, रिक्त स्थान या खाली कालांश की भरपाई के रूप में न हो।

एक तरफ कविता को वातावरण निर्माण की गतिविधि तक सीमित करने की बजाए भाषा सीखने की प्रक्रिया के अनिवार्य घटक के रूप में इस्तेमाल किए जाने की ज़रूरत है वहीं दूसरी ओर भाषा की कक्षा और पाठ्यपुस्तक में शामिल कविता को भाषा शिक्षण के रूढ़ दायरों से बाहर लाने की ज़रूरत है वर्तमान में प्राथमिक कक्षाओं से ही कविता का शिक्षण किसी भी अन्य विधा या विषय के पाठ की ही तरह प्रश्नोत्तर याद करने तक सीमित रहता है। भाषा की कक्षा में कविता को इस जड़ता से बाहर निकालने के

लिए हमें इस बात को समझने की ज़रूरत है कि आखिर व्यक्ति के जीवन में और कक्षा की प्रक्रिया में कविता करती क्या है?

कविता भाषा सीखने को रोचक बनाती है

चंदा मामा दूर के/ लल्ला लल्ला लोरी / हरा समंदर, गोपी चंदर/ मछली जल की रानी है आदि ऐसी अनेक कविताएँ हैं जिन्हें हम अपने बचपन से सुनते आए हैं। आज भी बच्चे उतनी ही रुचि के साथ इन कविताओं को गुनगुनाते मिल जाएँगे। लगभग सभी बच्चों का लोरी, खेल गीत, ब्याहगीत, त्यौहारों पर गाए जाने वाले गीत और फिल्मी गीत आदि के रूप में घर से ही कविता के एक व्यापक संसार से परिचय शुरू हो जाता है। उन्हें स्वाभाविक रूप से लय और तुकबंदी आकर्षित करती है। उनके खेलों में अक्सर छोटे-छोटे गीत कविताएँ मौजूद रहते हैं। यह बेवज़ह नहीं कि अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बो/ पोशम्पा भई पोशम्पा जैसी छोटी तुकबंदियाँ लगभग समूचे उत्तर भारत में बच्चे काम में लेते मिल जाएँगे। ऐसे ही बारिश को लेकर विभिन्न इलाकों के बच्चों के बीच तरह-तरह के गीत-कविताएँ प्रचलित मिल जाएँगी। जैसे राजस्थान के मरुस्थलीय इलाकों में बच्चे गाते हैं ''इंदर राजा पाणी दे, पाणी दे गुड़-धाणी दे''। यह गीत एक तरफ यहाँ के जीवन में बारिश की अहमियत को बताता है वहीं दूसरी ओर बच्चों के जीवन में मौजूद कविता की जगह और ज़रूरत को प्रमाणित करता है। इसी तरह ''टेसू राजा'' की कविता है। उसे भी बच्चे बहुत चाव से गाते हैं। यह कविता लोक में प्रचलित परम्परा से जुड़ी है। वहीं बच्चों को तरह-तरह से अनुमान करने के लिए भी प्रेरित करती है। लेकिन कविता से अनुमान की वह प्रेरणा तभी मिल सकती है जब शिक्षक कुछ देर ठहर कर बच्चों को कविता में कही गई बातों का अनुमान लगाने का अवसर प्रदान करे या बच्चों के परिवेश में कविताओं का एक व्यापक संसार हो जिसका वे आनन्द उठाते हों। कक्षा में यदि कुछ ही कविताओं के साथ बच्चों को अनुमान करने, सोचने, अपने अनुभव से जोड़ने के अवसर मिल जाएँ तो बच्चे कविता को महज़ याद कर सभा में सुनाने की बज़ाए उसकी भाषा और उसमें छुपी विषय वस्तु पर विचार करने, उसका आनन्द उठाने लग जाएँ।

कविता का चयन भी कक्षा में इस्तेमाल पर गहरा असर डालता है। भाषा के किसी भी शिक्षक के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि स्वयं उनके पास बच्चों के साथ उपयोग में लाई जाने वाली तरह-तरह की कम से कम 40-50 कविताओं का संकलन हो। इनमें बालगीत, चेतना गीत, लोरियाँ, लोकगीत, कविताएँ आदि सभी शामिल हो सकते हैं। शिक्षक को इस सन्दर्भ में पाठ्यपुस्तक पर कम से कम निर्भर रहना चाहिए। यदि पाठ्यपुस्तक संवेदनशील ढंग से बनाई गई हों तो उनमें बहुत सुन्दर कविताओं का संकलन किया जा सकता है। इसके बावजूद पाठ्यपुस्तक की अपनी सीमाएँ हैं। उनमें एक सीमा से अधिक कविताएँ शामिल नहीं की जा सकती हैं। राजस्थान की पाठ्यपुस्तक से ही एक उदाहरण लें—

हुआ सवेरा चिड़िया बोली / बच्चों ने तब आँखे खोलीं / अच्छे बच्चे मंजन करते / मंजन करके कुल्ला करते / कुल्ला करके मुँह को धोते / मुँह को धोकर रोज नहाते / रोज नहाकर खाना खाते / खाना खा कर पढ़ने जाते[12]

इस तरह की कविता बच्चों में कविता के प्रति आकर्षण विकसित नहीं करती। बल्कि यह उन्हें कविता और पाठ्यपुस्तक से भी विमुख कर सकती है। इसमें भाषा या विषयवस्तु किसी भी स्तर पर बच्चों के लिए रुचिकर कोई तत्व नहीं है। यह ऐसी बातें हैं जो बच्चों को कक्षा की प्रक्रिया में, प्रातःकालीन सभा में बातचीत के माध्यम से समझाई और बताई जा सकती हैं। शिक्षक के दबाव में बच्चे इन कविताओं को याद भी कर लेते हैं लेकिन भाषा शिक्षण के उद्देश्यों और बच्चों की रुचि के साथ इनकी कोई संगति

नहीं। इसके बरक्स और बहुत-सी छोटी-छोटी कविताएँ देखी जा सकती हैं जिन्हें याद करना, सुनाना बच्चों में भाषा की रुचि को बनाए रख सकती हैं। जैसे नीचे दी गई निरंकार देव सेवक की दो कविताओं को ही देखें–

1. चिड़िया कहती टी टुट टुट
   मुझको भी दे दो बिस्कुट
   भूखी हूँ मैं खाऊँगी
   खा-पीकर उड़ जाऊँगी

2. हाथी राजा बहुत भले
   सूँड हिलाते कहाँ चले
   कान हिलाते कहाँ चले
   मेरे घर भी आओ न
   हलवा पूड़ी खाओ न[13]

इस तरह की कविताएँ बच्चों की स्वाभाविक इच्छाओं, उनके जीवन से जुड़ी उन छोटी-छोटी बातों को रोचक ढंग से प्रस्तुत करती हैं, जिन्हें गाना, सुनाना बच्चों को अच्छा लगता है। दूसरी ओर यह कविताएँ कल्पना के संसार को भी खोलती हैं। इनमें भाषा के उपयोग की एक किस्म की ताज़गी देखने को मिलती है जो सामान्यतः कविता से बाहर शायद कहीं न मिले। इन कविताओं को गाना, दोस्तों को सुनाना और अपनी पसन्द के शब्द या पात्र चुन कविताएँ बनाना किसी भी बच्चे को स्वाभाविक रूप से आकर्षित करेगा।

कविता में लय होती है

अक्सर वे कविताएँ जिनके आखिर में तुक मिलती है बच्चे उन्हें मिल कर लय में गाते हैं। बच्चे स्वाभाविक रूप से कविता के भाव को भी ग्रहण करते हैं।

हरा समंदर, गोपी चंदर, बोल मेरी मछली कितना पानी?

इतना पानी

इतना पानी

इतना पानी, इतना पानी[14]

इस कविता को गाते हुए बच्चे न सिर्फ लय का बखूबी निर्वाह करते हैं बल्कि प्रश्न और उत्तर को भी प्रश्न और उत्तर के स्वाभाविक तेवर के साथ ही बोलते हैं। कविता में शब्दों का संयोजन या वाक्य निर्माण व्याकरणीय नियमों से बंधा नहीं होता बल्कि उसमें अधिक महत्वपूर्ण विषय और संप्रेषण की आन्तरिक लय होती है। जैसे सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की इस कविता को ही देखें–

इब्नबतूता
पहन के जूता
निकल पड़े तूफान में
थोड़ी हवा नाक में घुस गई
घुस गई थोड़ी कान में
कभी नाक को, कभी कान को
मलते इब्नबतूता
इसी बीच में निकल पड़ा
उनके पाँव का जूता
जूता उनका उड़ते-उड़ते
जा पहुँचा जापान में
इब्नबतूता खड़े रह गए
मोची की दूकान में[15]

इस कविता की अपनी आंतरिक लय है। बेशक छन्द और मात्रा की परम्परागत परिपाटी का निर्वाह यहाँ नहीं किया गया है, लेकिन इस कविता की वाक्य संरचना एक लय और तुक का निर्वाह करती है। बच्चों को इस तरह की कविताओं को गाने में विशेष आनन्द आता है।

कविता कल्पना को विस्तार देती है

'इब्नबतूता का जूता' इसी कविता का यदि भावार्थ किया जाए तो शायद विषय-वस्तु के स्तर पर कोई सीधा सन्देश, सूचना या जानकारी इसमें न खोज पाएँ, लेकिन बच्चों की कल्पना को इस तरह की कविता पंख दे देती है। जैसे की नाक में और कान में हवा के घुस जाने का

खयाल बच्चों के मन को गुदगुदाता है। नाक और कान को मलने के फेर में इब्नबतूता के जूते का उड़ जाना उन्हें और भी मज़ेदार लग सकता है। शिक्षक के पास यहाँ बच्चों के साथ बातचीत के कई तरह के अवसर हो सकते हैं, जैसे तूफान के साथ बच्चों का अनुभव, हवा को महसूस करने का उनका अनुभव आदि। इब्नबतूता की कद-काठी का अनुमान करना एक अन्य किस्म का अवसर खोलता है, वहीं जूते को उड़ते हुए रास्ते में क्या-क्या मिला होगा बच्चों के बीच चर्चा का एक और ही आयाम खोल सकती है।

ऐसी कविताओं का कक्षा में बार-बार इस्तेमाल बच्चों में भाषा के नए-नए इस्तेमाल के साथ ही साथ नई तरह की बातों की कल्पना करने के लिए भी प्रेरित करता है। इसी तरह से हाथी या चिड़िया की कविताएँ जो पूर्व में दर्ज़ की गई हैं, बच्चों को इस तरह की बातों को सोचने में बहुत मज़ा आता है कि वे हाथी को अपने घर बुला कर हलवा-पुड़ी खिलाएँ या चिड़िया उनका बिस्कुट खा कर चली जाए। छोटे बच्चों के साथ इस तरह की कविताएँ उन्हें अपने आस-पास को नई नज़र से देखने की दृष्टि प्रदान करती हैं और उनकी कल्पना के नए आयाम को खोलती हैं।

बच्चों को भाषा के विविध इस्तेमाल के अवसर देती है

सामान्यतः भाषा का इस्तेमाल बच्चे बातचीत के लिए करते हैं जिसमें किसी सूचना का आदान-प्रदान या किसी न किसी आवश्यकता की पूर्ति का भाव निहित होता है। बच्चों की कल्पनाओं पर बड़े भी सामान्यतः ध्यान नहीं देते और अक्सर उन्हें फिज़ूल बातें करने पर चुप करा दिया जाता है, या हँस कर टाल दिया जाता है। जबकि कहानी-कविता आदि विधाएँ बच्चों के सामने भाषा के इस्तेमाल का एक नया संसार खोलती हैं, जो उन्हें कल्पना करने, दुनिया को भिन्न नज़रिए से देखने और व्यक्त करने का अवसर देती हैं। कहानियों में जहाँ पात्रों और घटनाओं के स्तर पर बच्चों को कल्पना करने का अवसर मिलता है वहीं कविता भाषा के विविधतापूर्ण रचनात्मक अवसरों के संसार खोल देती हैं। यहाँ उन पर किसी बात को किसी खास क्रम में कहने या सुनने का भी दबाव नहीं होता इसके बावजूद कविता की आन्तरिक लय और माँग से बच्चे बहुत थोड़े से अभ्यास के साथ परिचित हो सकते हैं। कविता में किसी निश्चित वाक्य संरचना के अनुपालन की मज़बूरी नहीं है। और तो और यह उन्हें अपनी तरह से शब्द गढ़ने की भी आज़ादी देती है। इस तरह भाषा के उपयोग की यह एक पूरी नई सम्भावना को बच्चों के साथ खोल सकती है। जैसे इस कविता को ही देखें—

सर सर सर सर उड़ी पतंग
फर फर फर फर उड़ी पतंग
इसको काटा उसको काटा
खूब लगाया सैर सपाटा
अब लड़ने को जुटी पतंग
अर र र र देखो कटी पतंग[16]

कविता ध्वनियों के इस तरह इस्तेमाल की आज़ादी देती है और बच्चों को इस तरह की ध्वनियों को दर्ज़ करना बहुत रोचक लगता है। वे अपनी बातों में ऐसी तमाम ध्वनियों को बोल कर व्यक्त करते हैं, लेकिन कविता में इन ध्वनियों का इस तरह का इस्तेमाल कक्षा में भाषा के उपयोग के और अधिक आयाम को उनके सामने खोलता है। भाषा के साथ खेलने का अवसर देने के साथ कविता बच्चों को भाषा के रूढ़ इस्तेमाल से भी मुक्त करती है।

विभिन्न परिप्रेक्ष्य से दुनिया को देखने के नज़रिए का विस्तार करती है

उपरोक्त उदाहरणों के माध्यम से भी हम देख सकते हैं कि कविता बच्चे के लिए अपने आसपास की दुनिया को देखने के नए नज़रिए का विकास करती है। वह उन्हें रूपक गढ़ना सिखाती है। जैसे निरंकार देव सेवक की इस कविता को देखें—

वाह! गिलहरी क्या कहने

धारीदार कोट पहने
पूँछ बड़ी सी झबरैली
काली-पीली-मटमैली
डाली-डाली घूमती है
नहीं फिसल कर गिरती है[17]

यहाँ गिलहरी के लिए धारीदार कोट का रूपक बच्चों को अपने आस-पास के जानवरों और दुनिया को देखने का एक नया नज़रिया दे सकता है। इसके माध्यम से अपने पहनावे, जानवरों के पहनावे उनके साम्य आदि पर बात की जा सकती है। इसी तरह 'डाली-डाली घूमती है नहीं फिसल कर गिरती है' यह अंश भी बच्चों को चमत्कृत करता है कि यदि गिलहरी पेड़ से फिसल कर गिरने लगे तो उसकी चाल कैसे बदल जाएगी, वह कहाँ रहेगी आदि तमाम प्रश्नों को जन्म दे सकती है। इसी के साथ वे अपने आस-पास के अन्य जानवरों की चाल, उनके रहन-सहन के प्रति स्वाभाविक रूप से उत्सुक हो सकते हैं। कवि प्रभात की ''बंजारा नमक लाया'' कविता नमक जैसी मूलभूत ज़रूरत के बारे में बच्चों की संवेदना और नज़रिए का विस्तार कर सकती है। इतना ही नहीं परिवार और अड़ौस-पड़ौस तथा रिश्तों के प्रति भी संवेदना के विस्तार की तमाम सम्भावना इस तरह की कविताओं में मौजूद रहती है—

बंजारा नमक लाया

सांभर झील से भराया
भैरू मारवाड़ी ने
बंजारा नमक लाया
ऊँटगाड़ी में

बर्फ जैसी चमक
चाँदी जैसी गनक
चाँद जैसी बनक
अजी देशी नमक
देखो ऊँटगाड़ी में
बंजारा नमक लाया
ऊँटगाड़ी में

कोई रोटी करती भागी
कोई दाल चढ़ाती आई
कोई लीप रही थी आँगन
बोली हाथ धोकर आई
लाय नाज थाड़ी में
बंजारा नमक लाया
ऊँटगाड़ी में

थोड़ा घर की खातिर लूँगी
थोड़ा बेटी को भेजूँगी
महीने भर से नमक नहीं था
जिनका लिया उधारी दूँगी
लेन देन की मची धूम घर गुवाड़ी में
बंजारा नमक लाया
ऊँटगाड़ी में
कब हाट जाना होता
कब खुला हाथ होता
जान बूझकर नमक
जब भूल आना होता
फीके दिनो में नमक डाला
मारवाड़ी ने
बंजारा नमक लाया
ऊँटगाड़ी में[18]

यह हो सकता है कि आज गाँव में भी बंजारे नमक लेकर न आते हों, लेकिन यह कविता बच्चों को रूपकों के एक निराले संसार से परिचित कराती है। नमक जैसी मामूली लेकिन निहायत ज़रूरी वस्तु के लिए 'बर्फ जैसी चमक, चाँदी जैसी गनक, चाँद जैसी बनक' जैसे रूपक चीजों को देखने की दृष्टि का विस्तार करते हैं, उनमें सौन्दर्य की तलाश करना सिखाते हैं। वहीं 'कोई रोटी करती भागी, कोई दाल चढ़ाती आई, कोई लीप रही थी आँगन बोली हाथ धोकर आई' यह पंक्तियाँ ग्रामीण स्त्री के जीवन का जीवन्त चित्र उपस्थित करते हैं। उसके जीवन की व्यस्तताओं और उसके श्रम को रेखांकित करती हैं। ''थोड़ा घर की खातिर लूँगी, थोड़ा बेटी को भेजूँगी, महीने भर से नमक नहीं था जिनका लिया उधारी दूँगी'' यह पंक्तियाँ जीवन में नमक की ज़रूरत को रेखांकित करती हैं।

''कब हाट जाना होता, कब खुला हाथ होता, जान बूझ कर नमक जब भूल आना होता'' यह पंक्तियाँ जीवन में अभावों के प्रति संवेदना का विस्तार करने की सम्भावना को खोलती हैं। इस तरह एक कविता अपने में व्यापक संभावना को लिए होती है। कविता में निहित इस व्यापक सम्भावना को जानने के लिए यह ज़रूरी है कि कक्षा में छात्रों को कविता का आस्वाद लेने के अवसर हों। उसका पाठ रुचि के साथ किया जाए और उन्हें उसके मर्म तक पहुँचने में सहायता की जाए। उन्हें कविता की भाषा में निहित लाक्षणिक और व्यंजनापरक अर्थों तक पहुँचने के अवसर उपलब्ध हों। यानी कविता को आनन्द के लिए भी पढ़ा जाए और कविता की विषयवस्तु पर चर्चा के अवसर भी हों। उसके शिल्प पर भी चर्चा के अवसर हों। कई बार एक ही कवि की विविध कविताओं का पाठ किया जाए तो कई बार एक-जैसी विषयवस्तु पर आधारित विविध कविताओं का पाठ हो और उन पर चर्चा की जाए। कभी उन्हें स्वयं कविता रचने के अवसर दिए जाएँ तो कई बार एक विषयवस्तु के इर्द गिर्द कविता, कहानी तथा अन्य विधाओं से जुड़ी रचनाओं पर बात हो। इस तरह की गतिविधियों का उत्तरोत्तर विस्तार आगे आने वाली कक्षाओं में बच्चों की कविता की समझ का विकास करने में सहायक होगा।

पढ़ने और लिखने की प्रक्रिया को सहज बनाती है

इस तरह कविताओं का इस्तेमाल न सिर्फ बच्चों के लिए पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को सहज बनाता है बल्कि दुनिया के साथ उनके निजी रागात्मक सम्बन्ध का भी विकास करता है। ज़रूरी यह है कि शिक्षक इन कविताओं के साथ किस तरह का संवाद रचते हैं। आरम्भिक कक्षाओं में यह महत्वपूर्ण है कि परिवेश में भरपूर कविताएँ हों, आनन्द के साथ उनका पाठ किया जाए, कक्षा में कविता के आकर्षक पोस्टर हों और बच्चों को खुद अपनी कविताएँ रचने के मौके हों, पढ़ी और लिखी जाने वाली कविताओं के बहाने बच्चों के साथ खूब सारी बातें हों। बच्चे इस बात को समझने लग जाएँ कि जो वे कहते-सुनते हैं वही लिखा और पढ़ा जाता है, तो उन्हें एक कुशल पाठक बनने से कोई रोक नहीं सकता।

2. उच्च प्राथमिक स्तर पर विधा के साथ परिचय के रूप में

आरम्भिक कक्षाओं के स्तर पर यदि बच्चों के साथ कविता के माध्यम से सोचने, समझने, तर्क एवं विश्लेषण करने, कल्पना करने और अनुमान लगाने तथा नया रचने के अवसरों का पर्याप्त इस्तेमाल किया गया हो तो उच्च प्राथमिक स्तर तक आते-आते कविता को एक विधा के रूप में बच्चे अन्य प्रकार की पठन सामग्री से अलग देखने-समझने की सहज क्षमता विकसित कर लेते हैं। ऐसे में इस उम्र में बच्चों को अपनी भाषा में कविता की परम्परा, कविता की विभिन्न शैलियों, अलग-अलग देशकाल और परिस्थिति में रची गई कविताओं के साथ आरम्भिक परिचय कराया जा सकता है। यहाँ पर भी महत्वपूर्ण यह है कि बच्चे कविता को समझने के दबाव में उसे पढ़ने का आनन्द उठाना न भूलें। इसलिए इस स्तर पर बच्चों के साथ कविता का रुचिपूर्ण पाठ किया जाना ज़रूरी है। प्राथमिक कक्षाओं में कवि के नाम पर बहुत चर्चा न भी की जाए, परन्तु कविता के साथ कवि का भी नाम दर्ज रहता है तो बच्चों में यह समझ धीरे-धीरे विकसित हो सकती है कि किसी भी कविता का कोई रचनाकार भी होता है। खासतौर पर कक्षा 4 या 5 के स्तर पर आते-आते बच्चों को कवि के नाम से परिचित कराना शुरू किया जा सकता है। यही शुरुआत उच्च प्राथमिक स्तर पर आते-आते बच्चों में कवियों के व्यवस्थित परिचय और उनकी शैलीगत विशिष्टताओं से आरम्भिक परिचय के लिए आधार का काम कर सकती है।

कक्षा 6 तक बच्चे पढ़ने-लिखने में आत्मनिर्भर हो जाते हैं। अमूर्त अवधारणाओं से अन्तःक्रिया की आरम्भिक क्षमता विकसित हो रही होती है। कविता इस उम्र में भी बच्चों को आकर्षित

करती है लेकिन इस उम्र में उनकी रुचि और पसन्द बदल रही होती है। यह अनायास नहीं कि पिछले कई वर्षों से शिवमंगल सिंह सुमन की कविता 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के', बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविता 'विप्लव गायन', शमशेर बहादुर सिंह की 'चाँद से थोड़ी सी गप्पें', सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी' आदि कविताएँ कक्षा 6 से 8 के बीच पाठ्यपुस्तकों में अपनी जगह बनाए हुए हैं। इस दौर में कबीर, मीरा, रहीम आदि के पदों से भी पाठ्यपुस्तकों में बच्चों का परिचय होने लगता है, लेकिन यह स्वाभाविक ही है कि इन कक्षाओं के लिए चुने गए पदों में एक विशेष किस्म की सरलता पाई जाती है, जबकि इन कवियों की कविता की रेंज उससे कहीं व्यापक है। एनसीईआरटी द्वारा कक्षा 6 से 8 तक के लिए बनाई गई हिन्दी की पाठ्यपुस्तक 'वसंत' एक बेहतर उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

कैशोर्य की दहलीज़ पर खड़े बच्चे एक तरफ वयस्क संसार में कदम रखने को तैयार होते हैं, दूसरी तरफ दुनिया की जटिलताएँ उन्हें समझ में नहीं आती। यही वह समय भी है जब स्वायत्तता की चाह उनमें प्रबल हो रही होती है। इस उम्र में वे इस कविता के साथ तादात्म्य बना पाते हैं ''हम पंछी उन्मुक्त गगन के पिंजर बद्ध न गा पाएँगे''। इस समय, इस तरह की कविता उन्हें कविता के विविध निहितार्थों की समझ विकसित करने में भी सहायता करती है कि किस तरह एक कविता व्यक्तिगत स्तर पर और व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य दोनों ही स्तर पर एक साथ स्वायत्तता और आज़ादी की बात कर सकती है।

दूसरी ओर, कल्पना का संसार थोड़ा विस्तृत हो रहा होता है। अब 'चंदा मामा दूर के' जैसी कविताएँ उसे बचकानी लगने लगती हैं लेकिन यहीं

गोल हैं खूब मगर
आप तिरछे नजर आते हैं जरा।
आप पहने हुए हैं कुल आकाश
तारों जड़ा;
सिर्फ मुँह खोले हुए हैं अपना
गोरा-चिट्टा
गोल-मटोल
अपनी पोशाक को फैलाए
हुए चारों सिम्त।[19]

शमशेर बहादुर सिंह की यह कविता बच्चों को रूपकों की अनूठी दुनिया में ले जाती है। कल्पनाशीलता का यह फलक बच्चों के अनुभव और कल्पना से बहुत दूर नहीं, लेकिन इस अन्दाज़ में इससे परिचय ऐसी कविता ही करवा सकती है। इसके लिए बहुत ज़रूरी है कि शिक्षक स्वयं इस कविता को पढ़ते हुए इस कल्पना का भरपूर आनन्द लें। चाँद की सितारों जड़ी पोशाक और उसमें उसके गोल-मटोल गोरे मुख की कल्पना थोड़ी देर रुक जाने की माँग करती है, ताकि बच्चे इसे अपने-अपने स्तर पर महसूस कर सकें। कविता के साथ बहुत ज़रूरी बात यह है कि उसे समझने से ज़्यादा उसे संवेदना के स्तर पर महसूस किया जाए। हो सकता है कि कवि नया कुछ न कह रहा हो, या हो सकता है वह जो कह रहा है उसे यथार्थ में जाना ही न जा सके। कल्पना और यथार्थ के बीच की इस यात्रा को महसूस करना भाषा, कल्पना और संवेदना के विस्तार के असीमित आयाम खोल सकता है, बशर्ते इस काम को रुचि के साथ किया जाए।

3. माध्यमिक स्तर पर समकालीन साहित्यिक, सामाजिक सन्दर्भों के साथ विधा की समझ के लिए

इस स्तर तक आते-आते बच्चों की रुचियाँ अधिक स्पष्ट होने लगती हैं और अब कविता या साहित्य पढ़ना सिर्फ पाठ्यक्रम की बाध्यता ही नहीं रह जाता है बल्कि वे स्वयं अपनी पसन्द से भी इन विषयों में रुचि लेने लगते हैं। इस लिहाज़ से उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा को भी दो भागों में देखा जा सकता है। कक्षा नौ और दस के दौरान वे उस असमंजस के दौर से गुज़र रहे होते हैं जब उन्हें अपनी आगे की शिक्षा की

दिशा तय करनी होती है जबकि कक्षा ग्यारह और बारह में आते-आते वे यह निर्णय कर चुके होते हैं। पहले स्तर पर उनके साथ किया जाने वाला काम आगे के स्तर पर उन्हें कविता के एक बेहतर सुधी पाठक के रूप में अपनी रुचि का विकास करने में सहायता करता है वहीं आगे के स्तर पर साहित्य को गम्भीर अध्ययन के विषय के रूप में अपनाने की यात्रा शुरू होती है।

यहाँ कविता महज रुचि का विस्तार ही नहीं करती बल्कि इस स्तर से छात्र साहित्य की परम्परा, कविता के सैद्धान्तिक और ऐतिहासिक पक्षों को जानने समझने के लिए तैयार होते हैं, वे उसके सौन्दर्य बोध और समाज बोध की चर्चाओं को समझने लगते हैं।

विभिन्न देशकाल के परिप्रेक्ष्य में कविता की परम्परा, उसके शिल्प और शैली में आने वाले बदलावों, कवि की अपनी जीवन दृष्टि के सन्दर्भ में कविता का अध्ययन करना शुरू कर सकते हैं। इसलिए यह बहुत ज़रूरी है कि इस स्तर पर कविता का इस्तेमाल महज पाठ्यक्रम पूरा करने से आगे जाकर पाठ्यक्रम में शामिल कवियों और उनके समकालीन कवियों के बारे में जानने की उत्सुकता में किया जा सके।

सन्दर्भ

1. शैक्षिक संदर्भ, अंक 46, पृष्ठ 65-71

2. http://www.poetryfoundation.org/poems/46712/introduction-to-poetry

3. http://kavitakosh.org/kk

5. राजेश जोशी, *एक कवि की नोटबुक*, राजकमल प्रकाशन

6,7,8, 9 अंर्स्ट फिशर, *कला की जरूरत,* राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ 7-8

10, 11 भारतीय भाषाओं का शिक्षण, आधार पत्र

12. हिंदी 1, राजस्थान पाठ्यपुस्तक मंडल पृष्ठ 2

13. नन्हे-मुन्ने गीत, चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट

14. बोध शिक्षा समिति

15. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, *इब्नबतूता का जूता*

16. पतंग

17. गिलहरी

18. प्रभात की कविताएं, बंजारा नमक लाया

19. शमशेर बहादुर सिंह, वसंत, एनसीईआरटी , नई दिल्ली

देवयानी भारद्वाज पिछले दो दशक से भी अधिक समय से हिंदी लेखन एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय रही हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन में हिंदी भाषा की संदर्भ व्यक्ति के रूप में कार्यरत।
सम्पर्क : devyani.bhardwaj@azimpremjifoundation.org